YOUNG RESEARCHER
ISSN: 2277-7911Impact Factor: 5.077 (SJIF 2021)
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 12, Issue - II, Apr-May-June 2023

किशोरावस्था के विशिष्टता की खोजू समस्याएँ का निवारण में अभिभावक के महत्व

डॉ. कुमार अमित

Ph. D. (Education) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास.

Corresponding Author: डॉ. कुमार अमित

DOI - 10.5281/zenodo.8387194

सारंश:

अभिभावक बालक के विकास की प्रथम पाठशाला है। यह बालक मे निहित योग्यताओं एवं क्षमताओं का विकास करता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य बालक के विकास में योगदान देता है। यंग एवं मैक के अनुसार "परिवार सबसे पुराना और मौलिक मानव समूह है। पारिवारिक ढाँचे का विभिष्ट रूप एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न हो सकता और होता है, पर सब जगह परिवार अभिभावक का मुख्य कार्य है। बच्चे का पालन करना, उसे समाज की संस्कृति से परिचित कराना, सारंश मे उसका समाजीकरण करना"। क्लेयर ने परिवार का परिभाषा देते हुए कहा है- परिवार, सम्बन्धों की वह व्यवस्था है जो माता-पिता तथा सन्तानों के मध्य पाई जाती है।

परिचय:

माँटेसरी ने बालकों के विकास के लिए अभिभावक के वातावरण तथा परिस्थिति को महत्वपूर्ण माना है। इसलिए उन्होंने विद्यालय को घर कहा है।

थार्नडाइक महोदय ने अपने अध्ययनो द्वारा सिद्ध कर दिया हैं, कि बालक, वंशानुक्रम से कुछ मानसिक गुण और योग्यताएँ प्राप्त करता है। जिनमें वातावरण किसी प्रकार का अन्तर नहीं कर सकता है। इसी विचार का समर्थन करते हुए गेट्स एवं अन्य ने लिखा है। "अभिभावक का वातावरण का बालक के मानसिक विकास स घनिष्ठ सम्बन्ध है। दुःखद और कलहपूर्ण वातावरण मे बालक का उतना मानसिक विकास होना सम्भव नही है। जितना सुखद और शान्त वातावरण मे । इस सम्बन्ध में कुरपूस्वामी का मत है "एक अच्छा परिवार जिसमें माता-पिता मे अच्छे सम्बन्ध होते है जिसमे वे अपने बच्चों की रुचियों और आवश्यकताओं को समझते है एवं जिसमे

आनन्द और स्वतंत्रता का वातावरण होता है। प्रत्येक सदस्य के मानसिक विकास मे अत्याधिक योग देता है।

अभिभावक की सामाजिक स्थिति उच्च सामाजिक स्थिति के अभिभावक के बालक का मानसिक विकास अधिक होता है। इसका कारण यह है कि उसको मासिक विकास के जो साधन

उपलब्ध होता है वे निन्न समाजिक स्थिति के अभिभावक के लिए दुर्लभ होता है इसकी पुष्टि में स्टैंग के अग्रांकित शब्द उद्धत किये जा सकते है।

"उच्च सामाजिक स्थिति वाले अभिभावक के बच्चें वृद्धि की मौखिक और लिखित परीक्षाओं में स्पष्ट रूप से श्रेष्ठ होते है।

चित्रण व विवरण:

अभिभावक की शिक्षा अभिक्षित अभिभावक की अपेक्षा शिक्षित अभिभावक का बालक के मानसिक विकास पर कही अधिक प्रभाव पड़ता है। स्टैंग महोदय का कथन है "अभिभावक की शिक्षा, बच्चों की मानसिक योग्यता से निश्चित रूप से सम्बन्धित है।

उचित प्रकार की शिक्षा बालक के मानसिक विकास के लिए उचित प्रकार की शिक्षा अति आवश्यक है। ऐसी शिक्षा ही उसके मानसिक गुणों का विकास करती है।

किशोरावस्था की विशिष्टता की खोज एवं समस्याओं में अभिभावकों का निम्नवत भूमिका है।

(I) किशोरावस्था में अक्सर व्यक्ति ऊँची ऊँची आकांक्षाएँ एवं कल्पनाएँ करता है। जिनका वास्तविकता से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नही होता, अत: किशोरावस्था में किशोर में अपने साथियों के समूह से थोड़ी विशिष्ट एवं अलग पदवी बनाए रखने की प्रवृत्ति देखी गई है।

माता-पिता का शैक्षिक स्तर भी बालक के मानसिक विकास को प्रभावित करता है। शिक्षित माता-पिता बालक के मानसिक विकास में रुची लेता है तथा उसे सही मार्ग पर आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराते है, तथा प्रोत्साहित करते है। जबकि अशिक्षित माता-पिता बालको के मानसिक विकास की ओर ठीक □ से ध्यान नही देते और जरा भी असफलता प्राप्त होने पर उन्हें हतोत्साहित करते है। अतः परिवार के वातावरण का बालक के मानसिक विकाश पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

अभिभावक एवं शिक्षक बच्चों के विकास एवं शिक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं परिवार जहाँ माता-पिता होते है बच्चों के सीखने के लिए उत्तम स्थान होता है। विकास के क्रम में बच्चों को दो महत्वपूर्ण समस्याएँ है। एक खाने से संबंधित और दूसरी सीखने से संबंधित पहली समस्या का समाधान अभिभावक बच्चों को सही मात्रा एवं गुणवत्ता में सही भोजन उपलब्ध करवा कर करते है। जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। सीखने की प्रक्रिया मे हर स्टेज पर प्रोत्साहन मिलने से सीखना अधिक आनंदित करने वाला कार्य बन जाता है।

(II) बच्चों के शिक्षण में अभिभावक की भागीदारी एक बहुत महत्वपूर्ण घटक है। यह एक स्थापित तथ्य है कि माता-पिता की भागीदारी बच्चों की सफलता से संबंधित है। जब माता-पिता बच्चों की शिक्षा में घर में भागीदारी निभाते है तो बच्चों के स्कूल मे प्रदर्शन बेहतर होता है।

निष्कर्ष:

माता पिता को बच्चों के बेहतर पालन-पोषण के लिए जरूरतों एवं आवश्यकताओं के बारे मे जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। अभिभावक अपने बच्चौ के क्षमता एवं कमजोरियों का पता लगाकर यह जान सकते है कि उनका बच्चा अच्छी तरह कैसे सीख सकता है। अतः अभिभावक को बच्चों के स्कूल से संबंध में जानकारी लेती रहनी चाहिए। स्कूल के शिक्षकों के सम्पर्क मे हर बच्चों की हर समस्याओं का समाधान करना चाहिए एवं उनकी जरूरतों को पूरा करना चाहिए। अत: बच्चों की शैक्षिक सफलता के लिए यह महत्वपूर्ण नही है कि माता-पिता बच्चों का पालन-पोषण किस तरीके से करते है, बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों में कितनी भागीदारी निभाते है।

अभिभावकों को अपने बच्चों के विकास के लिए बचपन से ही प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि बच्चों अपने आत्म-विश्वास को बढ़ा सके। अभिभावक बच्चों को कहानी सुनाकर उनके शब्द - भंडार बढ़ाते है साथ ही उनकी कल्पना- शक्ति, सृजनात्मकता एवं निर्णय शक्ति को बढ़ाते है। विभिन्न प्रकार के खेल के माध्यम से वे बच्चों को शिक्षित कर सकते है। साथ ही बच्चों को वित्तीय संबंधी शिक्षा भी दे सकते है।

अत: हम सरलतापूर्वक कह सकते है कि अभिभावकों द्वारा दिया गया शिक्षाएँ बच्चों के भौतिक उपलब्धि मे बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इनमे सारे शिक्षाविदों का मानना है कि माता-पिता की भागीदारी बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन को बेहतर कर सकती है।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूचि:

- Statistical Theory of Research - New York
- Introduction to Research in Education - New York
- Statistics in Education & Psychology- Meerut.
- Research Methods in Education - An Introduction, FF Pea Cock Inc, 155 PP